Shri Sequeira: I beg to move:

"That the demand under the head foreign trade be reduced to Re. 1".

[*Need for faster availability of export incentives especially drawback* (73).]

Shri K. P. Singh Deo: I beg to move:

"That the demand under the head foreign trade be reduced by Rs. 100".

[*Failure to safeguard the Indian exports to West Germany* (75).]

"That the demand under the head foreign trade be reduced by Rs. 100".

[*Failure to take steps to counter Pakistan's attempt to cut into Indian trade in Islamic and South American countries* (76).]

"That the demand under the head Foreign Trade be reduced by Rs. 100".

[*Futility of participating in Turkish Trade Fair* (77).]

Shri Ramavatar Shastri: I beg to move:

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced to Re. 1".

[*Failure to pay much more attention towards handloom industry* (78).]

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced to Re. 1".

[*Failure to stabilise the prices of cotton, tea, cardamom and rubber* (79).]

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced to Re. 1".

[*Unnecessary expenditure on Khadi and Village Industries Commission* (80).]

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced to Re. 1".

[*Failure to nationalise tea plantations* (81).]

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced to Re. 1".

[*Failure to develop cottage and small scale industries* (82).]

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced to Re. 1".

[*Unsatisfactory progress of handicrafts industry* (83).]

Shri Surendranath Dwivedy: I beg to move:

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced by Rs. 100."

[*Working of Khadi and Village Industries Commission* (84).]

"That the demand under the head Other Revenue Expenditure of the Ministry of Commerce be reduced by Rs. 100."

[*Need to develop Powerloom Industry* (85).]

17.31 hrs.

*CONVERSIONS IN BIHAR

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, हमारे संविधान के आर्टिकल 25(1) में भारत के हर एक व्यक्ति को

*Half-An-Hour discussion.

[श्री कंवर लाल गुप्त]

धर्म की स्वतन्त्रता है, प्रचार करने के लिये भी और कौनसा धर्म वह अपनाये—उस के लिये भी। भारत की तो, अध्यक्ष महोदय, यह विशेषता रही है कि यहां पर हर एक आदमी स्वतन्त्रता के साथ जिस धर्म को वह अच्छा समझता है, उस धर्म को अपना सकता है। यहां पर ईसाई पादरी स्कूल चला रहे हैं, दवाखाने चला रहे है और उनकी संख्या भारत में, जो रजिस्टर्ड-फौरन-मिशनरीज हैं, 4328 हैं, लेकिन इन के अतिरिक्त भी और भी बहुत सारे पादरी हैं। अगर इन के सही आंकड़े देखे जायें तो दस हजार पादरी इस समय भारत में काम कर रहे हैं। अगर ये लोग केवल सेवा का काम करते, धर्म का प्रचार करते तो उस में किसी को आपत्ति नहीं थी, लेकिन, अध्यक्ष महोदय, इस की आड़ में वे एक ऐसा जहर फैला रहे हैं, उन में से बहुतों का ऐसी कोशिश होती है कि हमारे देश की जो सायनटी है, उसको बदल दिया जाय।

जो पैसा बाहर से—अमरीका से, यू० के० से, कैनाडा से—आता है, सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1227 लाख रुपये बाहर से आये हैं, लेकिन इन के अलावा कपड़ा, खाना, दूध आदि, दूसरे रूप में जो चीजें एम्बेसीज की मारफत आती हैं, उन का अन्दाजा लगाया जाय तो एक साल में 30 करोड़ रुपये के लगभग ये विदेशी-मिशनरीज खर्च करते हैं। अब इस की आड़ में ये विदेशी और दूसरे मिशनरीज जो काम करते हैं, बिहार की जो स्थिति हमारे सामने आई है, वह बड़ी भयंकर है, बड़ी एलार्मिंग रिपोर्टस आ रही हैं। जो लोग भूखे हैं, गरीब हैं, पीड़ित हैं, जिनको खाने को नहीं मिलता है, जिनके पास वस्त्र नहीं हैं, उन की कठिनाइयों का नाजायज फायदा उठा कर ये लोग उनका धर्म परिवर्तन करने की कोशिश कर रहे हैं। एक लार्ज-स्केल पर भारत के कोने कोने से, विदेशों से, बहुत सारे क्रिश्चियन मिशनरीज वहां पर पहुंच गये हैं तथा लार्ज-स्केल पर वहां कन्वर्शन शुरू हो गया है और ऐसा मालूम होता है कि आगे चल कर यह एक बहुत ही भयानक और डरावनी शक्ल अख्तियार कर सकता है।

वहां पर क्या हो रहा है? लोगों को क्रास के मैडल दिये जाते हैं, उन के गले में लटकाया जाता है और कहा जाता है कि उन्हीं लोगों को खाना मिलेगा जिनके गले में मैडल लटका होगा। उन मैडलों पर क्राइस्ट का निशान होता है। गांव के बाहर उन्होंने क्रास के पट्टे टांग रखे हैं, कई जगहों पर जहां मन्दिर थे वहां उन्होंने गिरजाघर बना दिये हैं। इस किस्म का काम खास तौर से बिहार के तीन जिलों में किया जा रहा है—हजारी बाग, रांची और पालामऊ जिले में। जहां पर पिछड़ी जातियों के लोग रहते हैं ट्राइबल एरियाज के लोग रहते है, वहां पर ये लोग ज्यादा काम कर रहे हैं।

अभी हाल में वहां की स्थिति का सर्वे करने के लिये, फैक्ट्स फाईन्डिंग के लिये एक कमेटी गई थी, उस ने अपनी रिपोर्ट में एक ऐसा केस ट्रेस किया है, जिसमें एक आदमी की चोटी काट दी गई। मैं अभी उस आदमी का नाम बताता हूं। वह अपनी चोटी नहीं कटवाना चाहता था, लेकिन उस को कहा गया कि तुम चोटी कटवाओगे, तब खाना मिलेगा। उस का नाम है—नानू महतो, पुत्र राकेचन्द महतो, गांव काराखार। जब उस ने चोटी कटवाने से मना कर दिया और रात को सो गया, तब वहां पर जो दूसरे लोग थे, जिनको कन्वर्ट किया गया था, उन के साथ मिलकर उसकी चोटी काट दी गई। ऐसे केसेज एक जगह नहीं हुए हैं। मेरे पास लिस्ट है एक एक गांव की जहां पर यह कनवर्शन हुआ है, जैसे कुजूराम, पो० गारू। वहां पर 77 लोगों को ईसाई बनाया गया, चेटाम, पो० बालूमठ,—5 आदमियों को ईसाई बनाया गया, औपेकाल, पो० बालूमठ—6 आदमियों को ईसाई

गया, इसी तरह मेरे पास 15-20
ी लिस्ट है। इस के मुताबिक करीब
100 आदमियों को वहां पर क्रिश्चियन
गया है। यह केवल एक तहसील की
। अभी परसों बिहार असेम्बली में
ं के डिप्टी मिनिस्टर से सवाल पूछा
ब उन्होंने जो आंकड़े बताये, उन के
: एक जिले में 250 के करीब लोग
न बनाये गये। जो दूसरी रिपोर्ट्स
के मुताबिक कई गांव के गांव ईसाई
ये गये हैं। लगभग 5 हजार लोगों को
ों में, जब कि वहां पर क़हत पड़ा
तरह से ईसाई बनाया गया है। लार्ज-
र कन्वर्शन हो रहा है।

ना ही नहीं, ये लोग थोड़ी दवाइयां
ते हैं, अस्पताल चलाते हैं। एक केस
ा को एक्जिमा हुआ, उस का पैर सूज
इस को ठीक कर दिया गया। जिस
ने उस को कन्वर्ट किया, उसका नाम
ा डब्लू० लकरा। इस तरह से
: एक हैं फादर एम० सी० बागट, एक
हां पर, अध्यक्ष महोदय, कई मिशन्ज
र रहे हैं। एक गांव में वहां पर लड़ाई
हो गया, उन्होंने पुलिस को रिपोर्ट
। सरकार ने उस फादर को वहां से
दिया। इन पादरियों के कामों को
ा वहां पर रजिस्ट करते हैं, उन में कुछ
माज के कार्य कर्ता हैं और कुछ राष्ट्रीय
वक संघ के कार्यकर्ता हैं, लेकिन उन
ाफ में लोग झूठे मुकदमे चलाते हैं।
इन के पास पैसा होता है, बाहर से
ता है। इस लिये मैं सरकार को यह
ो देना चाहता हूं कि अगर इन के
सही समय पर कदम नहीं उठाया
: वहां पर भी नागालैण्ड जैसी स्थिति
सकती है।

ध्यक्ष महोदय, आपको मालूम है कि
ागालैण्ड में या मिजो हिल्स में भारत
"रहने की प्रवृत्ति नहीं थी, उसी तरह
वहां पर भी ईसाई बनते रहे, उन को
फीलिंग्ज को एक्सप्लायेट कर के, उनकी
नैशनैलिटी को, देश के प्रति लायलटी को
बदलने का प्रयास चलता रहा तो इस के भी
बहुत खतरनाक नतीजे सामने आयेंगे।
यदि कोई व्यक्ति अपनी मर्जी से ईसाई बनता
है, तो हमें कोई आपत्ति नहीं है, हर एक
धर्म का प्रचार हो सकता है, भारत एक
सैक्यूलर स्टेट है, लेकिन हम हर एक आदमी
से चाहते हैं कि देश की वफादारी को नहीं
छोड़ना चाहिये, किसी की गरीबी का, उस
के दुख और पीड़ाओं का नाजायज फायदा
उठा कर इस प्रकार धर्म परिवर्तन नहीं करना
चाहिये।

अध्यक्ष महोदय, आपके जरिये मैं मांग
करता हूं कि जितने भी फौरन-क्रिश्चियन
मिशनरीज बिहार में गये हैं, उन को वहां से
निकाल देना चाहिये। जो तथ्य आज सदन
पर मैंने दिये हैं तथा वहां पर जो स्थिति है
सरकार फौरन उस का सर्वे कराये।
पिछले 6 महीनों में जो कन्वर्ट हुए हैं, इस
क़हत के दिनों में जो कन्वर्ट हुए हैं पिछले एक
साल में, उन को रजिस्टर कराने के लिये
कहना चाहिये और वे प्रमाण पत्र दें कि वे
अपनी स्वेच्छा से ईसाई बने हैं या किसी
लालच से बने हैं। इस प्रकार का सर्वे
यदि सरकार करायेगी तो यह चीज स्पष्ट
हो जायेगी कि ये जो मिशनरीज हैं इनकी
एक्टिविटीज एन्टी-नेशनल हैं। इस लिये
मैं मांग करता हूं कि इन फौरन-मिशनरीज
को निकाल देना चाहिये। तथा जो इण्डियन
मिशनरीज हैं उन के ऊपर बाच रखना
चाहिये, उनकी एक्टीविटीज की एक लेजिस्लेशन
बनाकर रेग्यूलेट करना चाहिये। जो कपड़ा,
पैसा और खाना उपहार में आता है, वह सब
उन के जरिये से डिस्ट्रीब्यूट न करायें, बल्कि
अपने माध्यम से डिस्ट्रीब्यूट कराना चाहिये।
सरकार एक कानून बनाये कि जितना पैसा
बाहर से आता है, जैसे 12 करोड़ रुपया
आपके हिसाब से आता है, कोई भी पैसा
क्रिश्चियन मिशनरीज द्वारा भारत में प्रचार

[श्री कंवर लाल गुप्त]

करने के लिये बाहर से नहीं आना चाहिये। यह इण्डियन क्रिश्चियन की भी मांग है। मेरे पास पत्र आये हैं जिसमें कि मांग की गई है कि यह जो बाहर से पैसा आता है वह यह गड़बड़ करता है। यहां के मिशनरीज ऐसा नहीं चाहते। इसलिए बाहर से पैसा आना बन्द कर देना चाहिए और कोई भी फौरेन-मिशनरीज यहां पर बासतौर से हिन्दुस्तान में न रहने पाये। यह जो हमारा कांस्टीटयूशन का रैलेवेंट आर्टिकल है जिसमें यह स्वतन्त्रता दी गई है, उस के अन्दर कुछ ऐसा प्राविजो है और वह यह है कि पब्लिक आर्डर, हैल्थ, कुछ एकदम खुला छूट नहीं है, कुछ रैस्ट्रिक्शन्स लगे हैं, मैं चाहता हूं कि जहां देश की सुरक्षा का सवाल हो, देश की राष्ट्रीयता का सवाल हो, मैं मंत्री महोदय से चाहूंगा कि उस के ऊपर कोई कानून बनाकर चाहे वह स्टेट को कहे, वहां की सरकार को कहें या केन्द्रीय सरकार को कहें, इस के लिए जल्दी ही कोई कदम उठाना चाहिए अन्यथा यह पौकट नागालैण्ड बन जायगी और यह ऐसी समस्या हो जायगी जिस का कि कन्ट्रोल करना मुश्किल होगा।

Mr. Speaker: There are about nine members wanting to put questions. Therefore, no speech is possible. He has already made the speech. The others may, therefore, put one question each, so that the Minister has the time to answer.

श्री शिव कुमार शास्त्री (अलीगढ़): अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन का एक नया सदस्य हूं और मेरे ऊपर यह प्रभाव है कि जब किसी अराष्ट्रीय और आपत्तिजनक कतिपय मुसलमानों और ईसाइयों की गतिविधियों के विषय में सदन का या मंत्रालय का ध्यान आकृष्ट किया जाता है तो तत्क्षण उस को सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है और इस प्रकार का वातावरण बना दिया जाता है कि उस विषय पर जितनी गम्भीरता से विचार होना चाहिए वह नहीं हो पाता है। जैसा कि पूर्व वक्ता ने कहा हम में से किसी भी व्यक्ति का यह विचार नहीं है कि किसी मत और सम्प्रदाय का प्रचार न हो। यहां प्रत्येक मत व सम्प्रदाय को अपने विचारों के प्रचार करने की पूर्ण स्वतन्त्रता व अधिकार है . . .

अध्यक्ष महोदय: स्पीच के लिए टाइम नहीं है सिर्फ क्वैश्चन पूछ लीजिए।

श्री शिव कुमार शास्त्री: मैं बहुत संक्षेप में अपनी बात कहता हूं। विशेष आपत्ति की बात तो यह है कि वह किसी की गरीबी के कारण उन का ईमान खरीदें इस की उन को अनुमति नहीं दी जा सकती। मेरे पास एक पादरी का पत्र आया है और उस से आप यह अनुमान लगा सकेंगे कि वास्तव में स्थिति क्या है। मैं उस के थोड़े से अंश आप को सुनाये देता हूं जिस से कि परिस्थिति पर पूरा प्रकाश पड़ जाय।

पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं —

"दो वर्ष से अधिक समय हुआ जब से मैंने रोमन कैथोलिक पादरी वृत्ति तथा कैथोलिक सम्प्रदाय से स्थापित ईसाई दल (सोसायटी आफ जैसस), जिस का कि मैं पूरे 30 वर्षों से सदस्य था, सम्बन्ध तोड़ लिया है। मैं केरल के नम्बूदरीपाद परिवार, जो केवल दो पीढ़ियों से ईसाई हैं, से हूं। मैं ने रोमन कैथोलिक अनुयायियों से इसलिए सम्बन्ध तोड़ा है क्योंकि मैं उन की धर्म परिवर्तन गतिविधियों, उन का भारत विरोधी रवैया तथा उन की धर्मान्धता बर्दाश्त नहीं कर सका।

मैं आप से निवेदन करता हूं कि आप कृपया लोक सभा के वर्तमान अधिवेशन में कुछ न कुछ की बात उठायें जिस से कि इस प्रकार की परिस्थितियों पर पूरा प्रकाश पड़े।

विदेशी रोमन कैथोलिक पादरी अपने
व साथियों के सहयोग से गिरजाघरों
ग्रेजी सम्प्रदायों के बच्चों के लिये खोले
हूलों तक में भी आरम्भ के वर्षों से ही
मत के हित में यह शिक्षा देते हैं कि केवल
कैथोलिक लोगों को ही स्वर्ग मिलेगा
हिन्दू लोग हमेशा के लिये नर्क की
में जलते रहेंगे क्योंकि ऐसा मालूम होता
वे झूठे देवताओं की पूजा करते हैं . . .

Speaker: He need not read out hole thing. If he reads out the thing then he will be taking the time of the others. He may ask his question only.

श्री शिवकुमार शास्त्री : थोड़ा सा अंश है ।

मैं गोवा–पूना वाइस प्रोविंस" नामक से सम्बन्ध रखता हूं और उनका मुख्यालय न्सेंट्स हाई स्कूल, पूना है । विदेशी अधिकतर गोवा के पादरी, पूना, नगर जिले में बड़ी तेजी से कार्य कर रहे र दयानामाता स्कूल, संगमनेर उन केन्द्र है । वे यहां गरीब महरों को देने में सफल हो जाते हैं और जब उन परिवर्तन कर लिया जाता है तो फिर लिए यतीमखाने तथा स्कूल खोलते

र्मनी के कुछ रोमन कैथोलिक बिशप ाबाद जिले के धर्म परिवर्तन कार्यों का ोषण करते हैं । गोआ के दो रोमन नक नेता जिन को धर्म परिवर्तन के लिये लता है व हैं पूना के बिशप एन्ड्रूडी सोजा ूना के सेंट विंसेंट्स हाई स्कूल के रेव० गोमज . . .

Speaker: I am sorry I cannot this. He cannot go on reading e whole thing. There are about others whom I have to call and other five minutes, the hon. Minister has to reply. He cannot go on reading out the whole article. I cannot allow it. If he wants he can hand it over to the hon. Minister.

श्री शिवकुमार शास्त्री : इस पत्र का जो आशय है उस पर मंत्री महोदय विचार करें ।

Shri Baburao Patel (Shajapur): Article 25 (2) of the Constitution entitles the State to regulate or restrict any political activity associated with religious practice. Will the Government consider the enactment of a law, without embarrassing the right of the individual to the freedom of his conscience, to regulate and restrict mass conversions if it is found and proved that the total number of conversions in a year either to Christianity or to any other religion assume a complexion of mass conversions?

Mr. Speaker: Now, Shri Kartik Oraon.

Shri Kartik Oraon (Lohardaga): How many minutes can I have?

Mr. Speaker: There is no question of any speech now. He can put a question.

Shri Kartik Oraon: This is a subject on which I can speak for hours.

Mr. Speaker: In that case, he may please sit down. I shall call other *Members to ask questions.*

Shri Kartik Oraon: I would like to ask one question.

The point is that this conversion is nothing new. But the process of conversion has gained more momentum after Independence than it had before. So, I would like to request Government to take measures to protect the Adibasis from conversion which is being done by taking advantage of their poor financial position.

In fact, I would go further and say that it would be a good thing if the

[Shri Kartik Oraon]

House could enact a legislation that it would be a penal offence to convert anyone below the age of 21 because a person below the age of 21 is not supposed to have his own mind. So, conversion of such young persons who are in a helpless condition, by force, should be stopped.

Shri Lobo Prabhu (Udipi): In view of the fact that my hon. friend has admitted the constitutional right to profess, pracise and propagate any faith in this country, in view of the fact that he has not given a single verified instance of conversion which has not been free and in the exercise of this right, in view of the fact that this country has received, according to him, Rs. 12 crores for the poor, without distinction of faith, in view of the fact that this country is indebted to other countries with Christian population, in view of the fact that we should maintain the proper image in those countries, in view of the fact that this country has a religion, the most tolerant in the world, a religion which says 'In whatsoever form you worship me, that form I shall approve', a very high concept of tolerance' in view of all these facts, I want to ask this simple question. Is this House so anxious to bring forward this legislation to restrict and regulate? Is there any evidence which has been put satisfactorily to Government to show that 'an attempt has been made with money, with medicine and with other help which has been so liberally given to the whole population of this country? Is this fair.....

Shri Kanwar Lal Gupta: Question.

Mr. Speaker: I think he has made the main point.

Shri Lobo Prabhu: The point is that it is no good saying that there are hundreds or thousands of cases. Mention those cases here and now and let them be verified.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : यह दुर्भाग्य की बात है कि बिहार में ही अकाल है और अकाल की वजह से ही यह ईसाई मिशनरी धर्म परिवर्तन की बात कर रहे हैं। हमारे मंत्री महोदय और सरकार का ध्यान बिहार की खबरों की तरफ भी गया होगा कि वे शिक्षा काटने की बात कहते हैं और मजबूर करते हैं, तभी रोटी देते हैं। एक तरफ तो यह हो रहा है और दूसरी तरफ इस बात का प्रश्न हो रहा है, जिसका खुलासा अभी दो तीन दिन पहले हिन्दुस्तान के बड़े हिन्दी लेखक स्वर्गीय प्रेमचन्द के लड़के श्री अमृत राय ने एक प्रेस कांफ्रेन्स में किया था, कि धर्म परिवर्तन के साथ-साथ ये मिशनरी लोग जो सहायता कार्य संगठित कर रहे हैं वहां के लोगों की तस्वीरें ले रहे हैं, स्केच ले रहे हैं और अमरीका भेज रहे हैं, और इस तरीके से हमारे देश की सुरक्षा को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं।

मैं जानना चाहता हूं कि क्या इन तमाम बातों की तरफ सरकार का ध्यान गया है ? और अगर गया है तो सरकार इन तरीकों को रोकने के लिये, या इस तरह की जो गड़बड़ियां चल रही है, उन्हें रोकने के लिये कोई तरीका इस्तेमाल में लाने का विचार है कर रही है या कोई इन्क्वायरी करवा कर उचित कार्यवाई करने का विचार कर रही है ?

श्री जगेश्वर यादव (बांदा) : अध्यक्ष महोदय, मैं माणिकपुर, जिला बांदा का एक दिन का दौरा करने गया था। वहां पर पहाड़ी इलाका है। काले भीलों की बस्ती में ऐसा देखा जाता है कि वहां पर ईसाइयों का एक ग्रुप है जो गल्ला बांटता है, दवा, बिस्कुट आदि बांटता है और भुखमरी की वजह से लोगों की सेवा करता है। मैं ने वहां के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से कहा कि यह लोग जो धर्म परिवर्तन के विषय में काम करते हैं उनके बारे में आप की क्या राय है। उन्होंने कहा कि वह लोग

हिन्दुस्तानियों से अधिक सेवा करते हैं। मैं कह सकता हूं कि शुरू-शुरू में भले ही वह इस तरह से कर रहे हों लेकिन इस में उनका एक स्वार्थ है। इस तरह से वह धर्म परिवर्तन का कार्य करते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार इस तरह का कोई इन्तजाम कर सकती है जिस से उन लोगों का गरीबी की वजह से धर्म परिवर्तन बचाया जा सके ?

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): I have heard some speeches which painted a very dismal and frightful picture. After notice was given of this half an hour discussion, have the Government of India made any on the spot study as to the correctness of what has been said on the floor of this House, that these persons had been converted under the pressure of hunger, under the strain of poverty and under the stress of famine, and whether this has happened only during the famine days or has been happening even before, because these foreign missionaries have been with us all these years even before India became free? If this has been happening all these years, why have Government not taken any steps to stop these forcible conversions, if they can be called as such?

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री (बागपत) : एशिया के पिछड़े देशों को यूरोपीय समाजवाद के पायोनीपर्स इन विदेशी पादरियों का पर्याप्त अनुभव है। मैं पूछना चाहता हूं कि यदि राजनीतिक दलों अथवा सामाजिक संगठनों को अमरीका से बहुत पैसा मिलने की बात सामने आती है तो शोर मचाता है और धर्म के नाम पर विदेशी धन का इस प्रकार उपयोग होता है तो इस सरकार को उस पर क्यों आपत्ति नहीं है, और क्या सरकार ऐसा नहीं कर सकती कि इस तरह के पैसे को अपनी जिम्मेदारी पर देश में खर्च कराये, और यदि यह स्वीकार्य न हो तो हिन्दुस्तान के ईसाइयों के द्वारा यह पैसा खर्च किया जाये ?

श्री राम गोपाल शालवाले : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री रघुवीर सिंह शास्त्री के इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और कहना चाहता हूं कि जो धन विदेशी पादरियों की तरफ से आता है यदि गोआ सरकार की तरह भारत सरकार इस प्रकार का नियम बना दे कि वह धन पादरियों के जरिये से गरीबों को न बांटा जाय बल्कि सरकारी एजेंसी के द्वारा बांटा जाये, तो हमें इस में कोई आपत्ति नहीं होगी।

इस के अतिरिक्त मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि फादर विलियम जो इंडियन क्रिश्चियन एसोसिएशन के प्रेजीडेंट हैं, वह भी मेरे इस प्रस्ताव के समर्थक हैं। सरकार को चाहिए कि वह फादर विलियम से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करे कि उनकी क्या इच्छा है। भारतवर्ष को अंग्रेज छोड़ कर चले गये और आज विदेशी गोरे पादरियों को हमारे धर्म के सम्बन्ध में प्रचार आदि का अधिकार नहीं है। यह हमारा नारा नहीं है, यह आर्य समाज का नारा नहीं है, यह फादर विलियम का नारा है जो कि इंडियन क्रिश्चियन ऐसोसिएशन के प्रेजीडेंट हैं।

मैं आज पहली बार इस सदन में बोल रहा हूं इसलिये आप की सेवा में निवेदन करने में यदि एक दो मिनट ज्यादा लग जायें तो आप मुझे क्षमा करेंगे।

मैं कहना चाहता हूं कि आज सहायता के नाम पर धर्म परिवर्तन हो रहा है। यह एक राजनीतिक षड्यन्त्र है। अभी एक माननीय सदस्य ने कहा था कि वह धर्म का प्रचार करते हैं। मैं इस बात को मानता हूं कि संविधान के अनुसार, भारतवर्ष के सभी लोगों को अपने धर्म का प्रचार करने का अधिकार है, और मैं भारतीय ईसाई पादरियों का स्वागत करूंगा यदि वह अपने धर्म की विशेषता बतला कर अपने धर्म का प्रचार करें। लेकिन वह यह कार्य नहीं करते हैं। अगर वह धर्म प्रचार के लिये आयें तो हम उन का मुकाबला करने के लिये तैयार हैं। लेकिन अगर वह पैसे के बल पर, हमारी गरीबी, बीमारी और बेकारी की वजह से फायदा उठा कर

[श्री रघुवीर सिंह शास्त्री]

हमारे देश का नक्शा बदलना चाहते हैं तो यह उचित नहीं है।

मुझे खतरा है कि इन बीस वर्षों में हमारे यहां जितने हिन्दू लोगों का धर्म परिवर्तन किया गया है उतना शायद अंग्रेजी राज्य के दो सौ वर्षों में जब कि इस देश के अन्दर पादरी को डिप्टी कमिश्नर के बराबर अधिकार हुआ करते थे, नहीं हुआ। मैं समझता हूं कि यह भारत सरकार की कमजोरी है और सरकार को इस कमजोरी को दूर करना चाहिये अगर इस कमजोरी को दूर नहीं किया गया तो मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि जिस तरह से आज नागालैंड में अलग राज्य बनाने की तैयारियां हो रही हैं उसी तरह से भारतवर्ष में अन्य नागालैंड और पाकिस्तान बनाने की तैयारियां की जा रही हैं। आज पादरी जोजफ, जो दस वर्ष पहले प्रशिक्षण ले कर पादरी स्काट के साथी के रूप में वहां काम करते रहे और जिन्होंने नागालैंड के हिन्दुओं को ईसाई बना कर इस भारत सरकार के विरोध में खड़ा कर दिया, महुआ डांड और डालटनगंज के जंगलों में जा कर हजारों हिन्दुओं को आतंकित कर रहे हैं। मेरे पास समय नहीं है नहीं तो मेरे पास कटिंग मौजूद हैं पढ़ने के लिये, लेकिन मैं कह सकता हूं कि आज भारतवर्ष के लिये बड़ा भारी खतरा है। इस देश में नये पाकिस्तान बनाने की योजना बन रही है।

हमारी सरकार ने नियोगी कमेटी को स्थापित किया था। पता नहीं उस पर कितना रुपया खर्च किया गया लेकिन नियोगी कमेटी की रिपोर्ट पर आज तक आचरण नहीं हुआ। मैं मंत्री महोदय से प्रार्थना करूंगा कि नियोगी कमेटी की रिपोर्ट को दुबारा खोलें और उस पर आचरण करने का प्रयत्न करें। इसके साथ साथ पंडित नेहरू ने देवी इन्दिरा के नाम कुछ चिट्ठियां लिखी हैं, मैं चाहता हूं कि मंत्री महोदय उन चिट्ठियों को भी पढ़ें। स्वतन्त्रता मिलने से पहले मैं एक बार भंगी कालोनी में महात्मा गांधी के पास गया था। वहां जब उनसे मेरी चर्चा हुई तो गांधी जी ने मुझ से कहा था कि अगर हमें आजादी मिल गई और अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गये तो एक कलम की नोक से विदेशी पादरियों को भारत की सीमा से बाहर निकाला जायेगा। हम आशा करते थे कि आजादी मिलने पर गांधी जी की इच्छा को मान कर विदेशी पादरियों को यहां से बाहर निकाला जायेगा, लेकिन मैं आज सरकारी, रिपोर्ट के आधार पर कहता हूं कि आजादी मिलने से पहले अंग्रेजी राज्य काल में 2217 पादरी यहां पर काम करते थे और आज लगभग 10 हजार गोरे पादरी ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं। यह कितनी भयानक स्थिति है कि करोड़ों रुपया बाहर से आ रहा है और हमारी गरीबी और बेकारी का नाजायज फायदा उठाया जा रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, जापान आदि देशों से विदेशी पादरियों को देश निकाला दे कर बाहर किया जा चुका है। वहां पर किसी को भी अधिकार नहीं है कि वह किसी का धर्म परिवर्तन करे। आज भारत वर्ष में कांग्रेस सरकार है, जिस को कमजोर सरकार कहते हैं, उस की कमजोरी से धर्म परिवर्तन होता है। मैं चाहता हूं कि इस विषय पर मुझे और बोलने का मौका दिया जाये।

Mr. Speaker: Order, order.

16 hrs.

Some Hon. Members rose—

Shri A. B. Vajpayee: We had also given our names before the discussion started.

Mr. Speaker: Yes. What am I to do? Half an hour is over. I have allowed this gentleman to speak because this is the first time he has come here. Last time also, about the jugglijhompri, they wanted to put a question. I could not allow them. I thought that because this is the first

time in six monhs he has come, I should allow him to speak. Let him complete what he wants to say.

श्री राम गोपाल शालवाले : अध्यक्ष महोदय, विदेशी मिशनरियों के पास से जो नक्शे पकड़े गए हैं, जिनके आधार पर भारतवर्ष में अनेक प्रकार के नागालैंड बनाने की तैयारियां हो रही हैं, मैं चाहता हूं कि भारत सरकार उनकी खोज करे। अगर मुझे समय मिले और आप मुझे आज्ञा दें, तो मैं सारा विस्तृत चित्र मंत्री महोदय के सामने रखने के लिये तैयार हूं।

Mr. Speaker: The Minister.

Shri Kartik Oraon: I come from that area. Yo have allowed him so much time. Please give me just a minute.

Mr. Speaker: No, please. The Minister.

श्री भोलहू प्रसाद (बांसगांव) : अध्यक्ष महोदय, मैं केवल एक प्रश्न पूछना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : सब सदस्यों का एक एक प्रश्न ही है।

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Vidya Charan Shukla): Mr. Speaker, Sir, I am glad to note that all hon. Members who spoke in this discussion have conceded and have mentioned the provisions in the Constitution under which every citizen of this country and also those who are allowed to come to this country for missionary work have a right to propagate their religion by legitimate means. As far as the legitimate means are concerned,—

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री : मंत्री महोदय से निवेदन है कि अगर हो सके, तो वह हिन्दी में जवाब दें

श्री राम गोपाल शालवाले : वह बहुत अच्छी हिन्दी जानते हैं। इस लिए वह हिन्दी में ही बोलें।

Mr. Speaker: You have started in English; you will have to continue in English. Because, some others may demand that you should speak in English if you were to start in Hindi.

Shri Vidya Charan Shukla: As far as the activities of propagation of one's faith is concerned, there could be no objection to such activities unless unfair and foul means were used. This position, all Members have emphasised, and this is exactly the position of the Government. If we come across any instance where unfair, foul or illegal means have been adopted to bring about conversion, even if it is done either collectively or individually, then we take appropriate action in this matter. As a matter of fact, whenever such reports have been received by us, we have taken immediate action in such matters by referring the question to the State Governments concerned, and asking them to take appropriate action. We have taken the reports from the State administrations and only when we have been convinced that the instance is free of doubt, only then, we have closed the matter. Otherwise, if there is any such forcible conversion, action is taken against that defaulting person.

There have been several complaints recently and this matter has also been agitated in this House and in the other House also, regarding exploitation of the helpless condition of the weaker sections of our society, and the drought-stricken areas of our country. This matter was referred to the Govenment of Bihar several times and even recently we have got a report from them about various points that hon. Members raised in their questions as well as in their letters. They have not given us any instance where any conversion has taken place by coercion or because of any unfair or foul means. There is no doubt that conversion has taken place, as hon. Members have, and particularly, Shri Kanwar Lal Gupta has, said. There have been a few cases of conversion and I can also

[Shri Vidya Charan Shukla]

corroborate that a few hundred people have been converted; but the complaints have not been received by us.

Shri Kanwar Lal Gupta: Have you made enquiries?

Shri Vidya Charan Shukla: I am saying that no complaints have been received by us here, from those areas that there has been any forcible conversion. In spite of that, we referred this matter to the Bihar Government to let us know if they have received any complaints about forcible conversion and if so, what action they have taken. The Bihar Government, which includes representatives of Jan Sangh, reported that they had received no complaints. Because of this, we are absolutely helpless. I can assure the House that the Government of India is very keen to stop any conversion from any religion to another religion by any methods of coercion or illegal methods.

श्री कंवर लाल गुप्त : बिहार गवर्नमेंट ने एक पादरी को उस को एन्टी-नेशनल एक्टिविटीज की वजह से निकाल दिया है और मंत्री महोदय कहते हैं कि कोई रिपोर्ट नहीं है

Shri Vidya Charan Shukla: I am depending on the report we have received from Bihar Government. If a missionary has been sent out of Bihar for anti-national activities, it may be for anti-national activities. I am not denying that. I am saying, about forcible conversion, we have received no such information from Bihar Government.

Regarding the question of putting a cross in the neck of the people and identifying them and giving them help, this question was specifically referred to the Bihar Government. But the Bihar Government sent a report saying no such instances have come to their notice. If any such thing happens there, they have assured us that they will take proper action to stop it.

A point was raised about some legal measure to stop conversion of people below the age of 18 or 21. I would like to draw the attention of the House to the proceedings of the Constituent Assembly in this connection. Our founding fathers also discussed this question. The sub-committee on fundamental rights actually proposed two clauses:

> "No person under the age of 18 shall be made to join or profess any religion other than the one in which he was born or be initiated into any religious order involving loss of civil status.
>
> Conversion from one religion to another brought about by coercion or undue influence shall not be recognised by law and the exercise of such a coercion shall be an offence."

This recommendation was considered by the advisory committee and they amended it further. After a debate in the Assembly Sardar Patel moved the amendment and this matter was referred to another committee, which after long consideration and taking into account the practical conditions in the law of the land and other things, decided to drop this matter completely from the Constitution. I am mentioning this only to indicate that this problem has been considered right from our days of independence. After that, the Government of India has been following a very strict policy in this matter. We have now made regulations for the incoming foreign money which goes to the missionaries. We check that it is not used for any illegal activities. We keep a strict check on the foreign missionaries operating in this country.

Shri Kanwar Lal Gupta: Tell us what are those checks.

Shri Vidya Charan Shukla: I can write to him and give those details. I have no time to read them here.

An hon. member said, there were about 10,000 missionaries in India. I do not think that is correct. There are only 4000 and odd foreign missionaries in our country at present.

श्री राम गोपाल शालवाले : मैं ने जो आंकड़ें प्राप्त किये हैं उन के अनुसार 4700 मिशनरीज तो कामनवैल्थ देशों के हैं और बाकी अन्य देशों के ।

Shri Vidya Charan Shukla: The figure I have given includes foreign missionaries belonging to Commonwealth countries as well as other countries.

I want to emphasise that we are equally anxious along with the hon. members to prevent any coercion or forcible conversion. We do not want to acquiesce with any such illegal activity either by our own missionaries or by foreign missionaries. If any such thing happens and if it comes to our notice, we shall definitely take appropriate action in the matter.

18.10 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, June 29, 1967/Asadha 8, 1889 (Saka).

GMGIPND—LS II—1019 (Ai) LSD— 13-11-67—1000.